ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

भारत विभाजन और कथाकार सआदत हसन 'मंटो'

सालिम मियाँ
शोधार्थी हिंदी विभाग
ए.एम.यू अलीगढ़
मोबा.–8126900309

भारत विभाजन आधुनिक भारतीय इतिहास की वह हृदय विदारक घटना है जिसने समूची मानवता को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया। इस घटना से भारतीय उपमहाद्वीप की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक संरचना में भी परिवर्तन हुआ। विभाजन लगभग एक शताब्दी से परवान चढ़ती आ रही उन कट्टरवादी शक्तियों की सक्रियता का परिणाम था जो विशाल नर संहार एवं जन–धन की हानि के साथ–साथ मानवता पर अत्याचार, बर्बरता तथा अपनी जन्मभूमि से अलगाव के रूप में हमारे सामने आया। ''बँटवारे के मूल्य पर मिली आजादी स्वतंत्र भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक जीवन में परिवर्तन की नियामक सिद्ध होते हुए देश के परिदृश्य में नए तेवर और नई जीवन शैली को विकसित कर रही थी, जाहिर है साहित्य की परिवर्तन की प्रक्रिया से गुज़रता है।''[1] काव्य और कथा–साहित्य दोनों ही में समान रूप से विभाजन की इस त्रासदी की अभिव्यक्ति अपने–अपने ढंग से मिलती है। इस क्रम में सआदत हसन मंटो की कुछ कहानियों एवं लघु कथाओं में इस त्रासदी की संवेदना को मार्मिक रूप से चित्रित किया गया है।

सआदत हसन मंटो, उर्दू ही नहीं, कदाचित विश्व कहानी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। लोकप्रिय होने के साथ ही उनका विवादों से भी नाता रहा। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से तत्कालीन समाज की प्रमुख समस्याओं को उठाया। आपकी कहानियों के केन्द्र में मुख्य रूप से तत्कालीन समाज की शोषित स्त्री ही रही, किन्तु इसके बावजूद इनकी कहानियों में विषय–वैविध्य दिखलाई पड़ता है। मंटो ने कथ्य और भाषा के स्तर पर श्लीलता–अश्लीलता की सीमा का अतिक्रमण किया। इसका मुख्य उद्देश्य अपने समय के यथार्थ का जीवंत चित्रण करना था। यद्यपि इस कारण मंटो का व्यापक स्तर पर विरोध भी किया गया। ''मंटो के बारे में एक धारणा यह बनी हुई है कि उसने केवल

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

समाज की बदनाम औरतों और सेक्स संबंधों पर ही कहानियाँ लिखीं है, पर ऐसा नहीं है।... वह समाज के हाशिए पर जीने वाली मानवता, मोचियों, तवायफों और ताँगे वालों का साहित्यकार था। इसके साथ ही उसकी कुछ कहानियों में पाँचवे दशक में घटित राजीतिक परिवेश का भी अंकन हुआ है।''[2] विभाजन की त्रासदी को लेकर लिखी गई कहानियों में 'टोबा टेक सिंह', 'सहाय', 'ठण्डा गोश्त', 'नंगी आवाजें', 'गुरुमुख सिंह की वसीयत', 'यजीद', 'खोल दो', और 'सियाह हाशिए' (1948) की लघु कथाएँ प्रमुख हैं।

मंटो को शायद इस कारण अत्यधिक विरोध सहना पड़ा कि विभाजन के समय मुस्लिम समाज द्वारा किए गए शोषण को इन्होंने उजागर करने का कार्य किया। आपने धर्म का चश्मा हटाकर एक सच्चे कलाकार की भाँति मनुष्य के जानवरपन को उघाड़कर कर रख दिया। विभाजन के पश्चात् मंटो पाकिस्तान गए और वहाँ जाकर भी उन्होंने पाकिस्तान के चेहरे से नकाब उतारने का सार्थक प्रयास किया। उनकी इसी स्पष्टवादिता के कारण पाकिस्तानी सरकार ने इन्हें पागल घोषित करके पागलखाने भेज दिया। कहा जाता है कि इनकी प्रसिद्ध कहानी 'टोबा टेकसिंह' उनके आत्मानुभव पर ही आधारित है। 'टोबा टेकसिंह' पश्चिमी पंजाब का एक प्रसिद्ध गाँव है जो अब पाकिस्तान में है। इस गाँव का प्रसिद्ध जमींदार अचानक किसी कारण पागल हो जाता है। उसे पागलों के अस्पताल में भर्ती कर दिया जाता है। उसका नाम शबनसिंह था किन्तु अब सभी उसे टोबा टेकसिंह कहने लगे हैं। उसे यहाँ पन्द्रह वर्षों से अधिक हो गए हैं, वह सोता भी नहीं, बैठता भी नहीं, खड़े–खड़े उसके पैर सूज गए हैं। उसे किसी बात का होश नहीं। ''बँटवारे के दो तीन साल बाद पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की सरकारों को ख्याल आया कि साधारण कैदियों की तरह पागलों की अदला–बदली होनी चाहिए अर्थात् जो मुसलमान पागल हिन्दुस्तान के पागलखाने में हैं उन्हें पाकिस्तान पहुँचा दिया जाए और जो हिन्दू और सिख पाकिस्तान के पागलखानों में हैं उन्हें हिन्दुस्तान के हवाले कर दिया जाए।''[3]

इस कहानी द्वारा मंटो ने राजनीति, विभाजन और अंग्रेजो की पक्षपातपूर्ण व्यवस्था पर तीखे व्यंग्य किए हैं। पेड़ पर चढ़कर बैठे हुए पागल द्वारा विभाजन के मूल सिद्धान्त की ही खिल्ली उड़ाई गई है। शबनसिंह को एक ही चिन्ता है कि उसका गाँव टोबा टेकसिंह हिन्दुतान में गया या पाकिस्तान में। वह बार–बार सभी पागलों से यही प्रश्न करता है। किन्तु उसकी शंका का समाधान कोई नहीं कर पाता। उसके गाँव का एक व्यक्ति उससे

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

मिलने आता है, जिसके द्वारा शबनसिंह को पता चलता है कि उसका गाँव टोबाटेक सिंह तो पाकिस्तान में चला गया अब वह पागल खाने को छोड़ना नहीं चाहता। उसका गाँव जिस देश में है वह भी वहीं रहना चाहता है। अफ़सर उसे समझाते हैं कि उसका गाँव हिन्दुस्तान में ही है, किन्तु वह नहीं मानता। जब बलपूर्वक उसे दूसरी ओर ले जाने का प्रयास किया गया तो वह बीच में एक स्थान पर इस प्रकार अपनी सूजी हुई टागों पर खड़ा हो गया कि जैसे अब कोई ताकत उसे वहाँ से हिला नहीं सकेगी। एक दिन देखा गया कि वह आदमी जो पिछले पन्द्रह वर्षों से दिन–रात अपनी टागों पर खड़ा रहा था, औंधे मुँह पड़ा हुआ है। **"उसकी टागों के पीछे हिन्दुस्तान के पागलों का दायरा था और उसके सर की ओर पाकिस्तान के पागलों का दायरा था। और बीच भूमि में जिसका कोई नाम न था टोबा टेकसिंह पड़ा था।"**[4] जफर पयामी के अनुसार यह कहानी तब लिखी गई जब मंटो को पाकिस्तानी सरकार ने 1943 ई0 में लाहौर के पागलखाने में भर्ती करा दिया था। नरेन्द्र मोहन के अनुसार **"इस कहानी में टोबा टेकसिंह एक ऐसी अद्भुत प्रतीक सत्ता में ढल गया है जो समूची संस्कृति को क्रूर राजनीतिक सत्ता के बरक्स खड़ा कर देती है। कहानी में दो देशों के बीच की जगह–'नो मेन्स लैंड'–भी प्रतीक में ढलती दिखती है। यह वह जगह है जहाँ राजनीतिक क्रूरता का शिकार टोबा टेकसिंह चीखता है और पछाड़ खाकर गिर जाता है।"**[5]

'टिटवाला का कुत्ता' कहानी में भी कुत्ता गहरे प्रतीकार्थ से युक्त है। इस कहानी में हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी सेनाएँ एक दूसरे के सामने मोर्चा संभाले खड़ी हैं। तभी कुत्ते की आवाज़ सुनाई पड़ती है। हिन्दुस्तानी सेना को शक है कि कुत्ता पाकिस्तानी है, उधर की सेना को लगता है कि कुत्ता हिन्दुस्तानी है। दोनों सेनाएँ कुत्ते पर ताबड़ तोड़ गोलियाँ दाग देती हैं। एक जवान अपने बूट की एड़ी से जमीन खोदते हुए कहता है–"अब कुत्तों को भी या तो हिन्दुस्तानी होना पड़ेगा या पाकिस्तानी"। इस कहानी में भटकता हुआ कुत्ता आम आदमी का प्रतीक बन गया है। जो कभी हिन्दुस्तानी तो कभी पाकिस्तानी बनकर राजनीतिक वहशीपन का शिकार होता है। मंटो की मान्यता है कि बँटवारा हो जाने पर भी दोनों ओर की जनता सांस्कृतिक धरातल पर एक थी।

मंटो की प्रसिद्ध एवं विवादास्पद कहानी 'खोल दो' की पृष्ठभूमि का आधार शरणार्थी जीवन की विडम्बनात्मक अभिव्यक्ति है। मंटो ने स्पष्ट किया कि विभाजन के समय हिन्दू ने

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

मुस्लिम का शोषण, बर्बरतापूर्ण आचरण किया और मुस्लिम ने हिन्दू के साथ। किन्तु जहाँ एक ओर इस भयावह समय में हिन्दू भी अपने हिन्दू भाई पर विश्वास नहीं कर पा रहा थे, विश्वासघात और मौका परस्ती कर रहे थे, उसी प्रकार मुसलमान भी मुसलमान को शक की नजर से देख रहे थे। एक दूसरे की कमज़ोरियों का अनुचित लाभ उठा रहे थे। पैसा, सामान, इज्ज़त, आबरू सब लूटी जा रही था। हिन्दू–हिन्दू को और **मुस्लिम–मुस्लिम को भी नहीं छोड़ रहे थे। प्रत्येक स्वयं के प्राणों की रक्षा चाहता था। "विभाजन के दिनों हिन्दुओं द्वारा मुस्लिमों पर किए गए अत्याचारों का दर्द भरा चित्रण पाकिस्तानी लेखकों ने किया है, और मुस्लिमों द्वारा हिन्दुओं पर किए गए अत्याचारों का वर्णन इधर के लेखकों ने किया है। परन्तु ऐसे बहुत ही कम लेखक है जिन्होंने उन दिनों मुसलमानों द्वारा मुसलमानों पर और हिन्दुओं द्वारा हिन्दुओं पर किए गए अत्याचारों का चित्रण किया हो।"**[6] यह कहानी आधारित है उस समय के तथाकथित स्वयंसेवियों पर जो अवसर पाकर अपने ही मजहब की लड़कियों–औरतों की आबरू उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने या उन्हें उनके अपनों ये मिलवाने के नाम पर लूट रहे थे । कथा के केन्द्र में सत्तरह वर्षीय किशोरी सकीना है जो उस आपधापी में रास्ता भटक जाती है, अपने पिता से बिछड़ जाती है–**"पूरे तीन घण्टे तक वह सकीना–सकीना पुकारता, कैम्प की खाक छानता रहा मगर उसे अपनी जवान इकलौती बेटी का कोई पता न मिला, चारो तरफ एक धाँधली सी मची थी, कोई अपना बच्चा ढूँढ रहा था, कोई माँ, कोई बीबी और बेटी।"**[7] सहायता और सहयोग के लिए तैनात उसके मज़हब के स्वयंसेवक सकीना के पिता से उनकी बेटी को सलामत पहुँचाने का आश्वासन देते हैं। किन्तु सकीना जब इन भेड़ियों को हत्थे चढ़ जाती है तो वे उसका शारीरिक शोषण करते हैं। बलात्कारजन्य अत्याचार की अति उसको इस स्थिति में पहुँचा देती है कि डॉक्टर के कहने पर 'खिड़की खोल दो' वह अपना इजारबन्द खोल देती है। उसका पिता चिल्लाता है–"मेरी बेटी जिन्दा है"। पिता की यह प्रसन्नता अपने यथार्थ में एक जड़ हो चुकी मानसिकता को प्रकट करती है। डॉक्टर यह देखकर पसीने से सरावोर हो जाता है।

संपूर्ण कहानी न केवल इस्लामी तहजीब पर अपतु मनुष्य की पशुवृत्ति पर भी एक करारा थप्पड़ है। यह समय ऐसा था जब विश्वास की सभी सीमाओं का अतिक्रमण हो

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

चुका था। इस कहानी में शब्दों की मार ज़बरदस्त है। एक ओर लड़की का बाप सिराजुद्दीन रजाकार नौजवानों की सफलता के लिए दुआ माँग रहा है तो दूसरी ओर वही रजाकार उसकी बेटी की आबरू लूट रहे होते हैं। कहानी इस बात की पुष्टि करती है कि विभाजन के समय मात्र एक धर्म वालों ने दूसरे धर्म वालों को ही नहीं लूटा बल्कि मनुष्य ने ही मनुष्य को लूटा था। पाकिस्तानी सरकार शायद इसीलिए मंटो के विरूद्ध थी। मंटो ने बहुत निष्पक्षता और तटस्थता के साथ वही लिख जो उन्होंने अनुभव किया था, सुना और देखा था। इस कहानी का नंगापन पाठक को गुदगुदाता नहीं अपितु कहानी में आए हुए डॉक्टर की तरह पसीने–पसीने से तर–बतर कर देता है और यही इस कहानी की शक्ति है।[8]

'नंगी आवाजें' कहानी में दंगों के बाद उत्पन्न हुई आदमी की एक दूसरी नियति का चित्रण किया गया है। एक लम्बी छत पर भारत से आने वाले मुसलमान शरणार्थी अपनी अपनी चारपाइयों के इर्द–गिर्द अपनी ओर से पर्दा करके सोते हैं। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें आदमी निर्लज्ज पशु और विक्षिप्त हो जाने के लिए विवश होता है। दंगों के दौर की मानसिकता को मंटो ने कई कहानियों में बड़ी सूक्ष्मता से उभारा है। एक ही व्यक्ति का आचरण विभिन्न परिस्थितियों में कैसे बदलता है–क्रूर से कोमल, कोमल से कठोर, एक साथ मानवीय और अमानवीय लगावपूर्ण और लगावहीन यह उनकी कई कहानियों में उजागर होता है। विभाजन की त्रासदी को आधार बनाकर लिखी गई अधिकांश, हिन्दू मुस्लिम एवं सिख चरित्रों के इर्द–गिर्द ही दिखाई पड़ती हैं। इसी क्रम में मंटो की 'मोजेल' बहुचर्चित कहानी है। कहानी में धर्म का लबादा ओढ़े व्यक्ति के वास्तविक चरित्र को उजागर किया गया है। इस कहानी का आधार मुम्बई में होने वाले विभाजन कालीन दंगों की पृष्ठभूमि है। एक सिख नवयुवक त्रिलोचन पड़ोसी यहूदी लड़की मोजेल से मन ही मन प्रेम कर बैठता है।[9] मोजेल को उसकी वेशभूषा पसंद नहीं, इस कारण वह अपने केशों का बलिदान भी देता है। अंत में हारकर वह अपने अतीत की ओर लौटते हुए एक सिख युवती से प्रेम करने लगता है। उसकी सिख प्रेमिका दंगो में फँस जाती है तथा मोजेल उसकी प्रेमिका को बचाने के लिए अपने प्राण न्यौछावार कर देती है। दूसरी ओर त्रिलोचन उसके प्राण बचाने हेतु अपनी पगड़ी तक उतारने को तैयार नहीं होता। त्रिलोचन के चरित्र–चित्रण

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

के माध्यम से कहानी धर्म के दिखावे पर आधारित विघटनकारी प्रवृत्ति को उद्घाटित करती है। भारत विभाजन के समय बदले की भावना ने आग में घी का काम किया। इस प्रकार परिस्थितियाँ और भयावह तथा विध्वंसकारी होती गईं।

क्रूरतम अत्याचारों, बर्बरतापूर्ण आचरण एवं बदले की भावना से ओत–प्रोत कहानी 'शरीफन' है। दंगाइयों के वहशीपन के कारण कासिम की युवा पुत्री शरीफन की मृत्यु हो जाती है। इस घटना से विक्षिप्त उसका पिता सुनसान बाजार में अपनी पुत्री की मृत्यु का बदला लेने के लिए दौड़ पड़ता है। कुछ इसी प्रकार के कथ्य को लेकर लिखी गई 'गुरूमुख सिंह की वसीयत' कहानी भी है। ''दंगे के भयावह परिवंश में ये मानवीय संवदेना और आचरण को रेखांकित करने वाली कहानियाँ हैं।''[10] मंटो ने विभाजन कालीन परिस्थितियों में राजनीतिक, सामाजिक और प्रशासनिक शक्तियों की विध्वंसकारी भूमिका की वास्तविकता को 'देख कबीरा रोया' कहानी के माध्यम से चित्रित किया है। कहानी में कबीर के चरित्र का मिथकीय प्रयोग करते हुए विध्वंसकारी शक्तियों को एक–एक करके संक्षिप्त कलेवर के बावजूद प्रभावशाली ढंग से उद्घाटित किया गया है।

'खुदा की कसम' कहानी के माध्यम से मंटो ने तत्कालीन मानवीय संवेदना को उकेरा है। प्रस्तुत कहानी के द्वारा दिखाया गया है कि विभाजन ने न केवल व्यक्ति का जीवन संकट में डाल दिया था, अपितु वह अपनों के लिए की संवेदनाशून्य हो गया था। व्यक्ति बाह्य धरातल पर भयावह बर्बरता से इतना आतंकित हो चुका था कि जीवनोपयोगी छोटी–छोटी वस्तुओं के लिए अमानवीय कृत्य करने को विवश था। प्रस्तुत कहानी की इस प्रक्रिया को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत करती है। अधर में लटकी जिन्दगी से व्यक्ति इतना दूर गया था कि प्यार और ममता जैसे मूल्य भी अपना महत्व खोते जा रहे थे। बेटी के वियोग में माँ पागल होकर इधर–उधर भटक रही थी। बेटी उसे देखकर भी रास्ता बचाकर निकल जाती है। यहाँ उस बेटी का आचरण मानवीय त्रासदी के व्यापक और हृदय विदारक प्रभाव को रेखांकित करता है। मंटो की 'स्याह हाशिए' की लघुकथाएँ विभाजन कालीन त्रासदी के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। आकार की दृष्टि से भले ही इन्हें लघु कथा कहा जाए किन्तु प्रभाव की दृष्टि से इन्हें किसी भी दीर्घकार कहानी से कमतर नहीं कहा जा सकता। 'खोल दो', कहानी की भाँति मंटों इन लघुकथाओं में भी अत्यधिक

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

तटस्थ, स्पष्टवादी और संपूर्ण नग्नता को लेकर खड़े हैं, यह नग्नता ही पाठक को अन्दर तक झकझोर देती है।

'मजदूरी' कहानी में पुलिस और दंगाइयों की भूमिका को रेखांकित किया गया है। उस समय लूट खसोट का बाजार गर्म था। चारो ओर आग भड़कने लगी थी। लोगों को जो भी चीज मिल रही थी उठा रह थे। एक कशमीरी मजदूर चावल चावल की बोर उठाकर ले जा रहा था और पुलिस उसके पीछे पड़ी है। उन्हे शंका है कि वह कोई कीमती चीज ले जा रहा है। जब वह नहीं रूकता तो उसकी टागों पर गोली चलाई जाती है और बोरी के साथ उसे थाने लाया जाता है। जब वह थक गया तो उसने अपनी मैली टोपी से माथे का पसीना पोंछा और चावल की बोर की ओर ललचाई आंखों से देखकर थानेदार के सामने हाथ फैलाकर कहा, **"अच्छा हजरत तुम बोरी अपने पास रख– मैं अपनी मजदूरी मांगता चार आना"।**[11]

पाकिस्तानी पुलिस की हृदयहीनता का एक ओर इसमें चित्रण है तो दूसरी ओर मजदूरों के सामने उपस्थित जीविका की समसया। समझ में नहीं आता कि पुलिस और फसादियों में अंतर कैसे किया जाए। फसादी निस्सहाय व्यक्तियों को अपना शिकार बना रहे थे और पुलिस इन फसादियों से लूटा हुआ सामान लूटने में लगी थी और एक प्रकार से इसकी एक श्रंखला सी बन गई थी। पुलिस के अत्याचार उसी उसी प्रकार जारी थे जब वहाँ हिंदू थे त बवह उनको लूट रही थी या लूटने में सहयोग कर रही थी, जब हिंदू चले गए तब मुस्लिमों को लूट रही है। भले ही वह मजदूर कितना ही गरीब क्यों न सही।

'उचित कार्यवाही' कहानी के माध्यम से लेखक ने भारत के अहिंसावादियों पर व्यंग्य किया है। फसाद के चार दिनों के बाद जब माहौल शांत होने लगा तब एक घर के अंदर से पति–पत्नी बाहर आए जो चार दिन से तहखाने में छिपकर बैठे थे। बाहर आने के बाद उन्होंने लागों को आवाज दी और कहा–''हम दोनों अपने आप को तुम्हारे हवाले करते हैं । कुछ लोग कहने लगे हमारे धर्म में जीव हत्या तो पाप है। वे लोग जैनी थे। लेकिन इन्होंने फैसला किया कि उचित कार्यवाही के लिए दोनों मियाँ–बीबी को मोहल्ले के लोगों के हवाले कर दिया जाए।[12]

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

अतः कहा जा सकता है कि मंटो ने एक साहित्यकार के दायित्व का पालन करते हुए भारत विभाजन मानसिकता पर गहन रूप से एवं विस्तारपूर्वक निरपेक्ष दृष्टि से विचार किया और मानवताबोध को जाग्रत करने का प्रयास किया। आपने निष्पक्षता साथ मानवीय संवेदना का चित्रण किया।

संदर्भ–सूची

1 अभिनव भारती–2010–11, (ए.एमय.यू हिंदी विभाग की वार्षिक पत्रिका,) सं0 आशिक बालौत (लेख मेराज अहमद) पृ. 63
2 गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास, भाग–1, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ–407
3 डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, देश–विभाजन और हिंदी कथा–साहित्य, संचयन प्रकाशन कानपुर, संस्करण प्रथम 1987, पृष्ठ–240
4 मंटो की कहानियाँ,(टोबा टेकसिंह) संपादक जफर पयामी, प्रकाशक रणजीत प्रिंटर्स, संस्करण प्रथम, पृष्ठ–4
5 गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास, भाग–1, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ–407
6 डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, देश–विभाजन और हिंदी कथा–साहित्य, संचयन प्रकाशन कानपुर, संस्करण प्रथम 1987, पृष्ठ–243
7 देवेन्द्र इस्सर,(संपादक) मंटोनामा,(खोल दो) पृष्ठ–39
8 डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, देश–विभाजन और हिंदी कथा–साहित्य, संचयन प्रकाशन कानपुर, संस्करण प्रथम 1987, पृष्ठ–244
9 देवेन्द्र इस्सर,(संपादक) मंटोनामा,(मोजेल) पृष्ठ–150
10 गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास, भाग–1, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ–408
11 सिक्का बदल गया, संपादक नरेन्द्र मोहन,(मजदूरी) पृष्ठ–21
12 मंटो की कहानियाँ,(उचित कार्यवाही) संपादक जफर पयामी, प्रकाशक रणजीत प्रिंटर्स, संस्करण प्रथम, पृष्ठ–278

सालिम मियाँ
शोधार्थी हिंदी विभाग

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

ए.एम.यू अलीगढ़
मोबा.–8126900309

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)